

## Nirzar - Where art & soul blend

By AVANTI NIODING

**A**rt is one of the finest forms of expressions of soul and is the most intelligent way of focussing one's energy and shaping it beautifully. Indian culture is rich and diverse owing to the fine arts embedded in its roots.

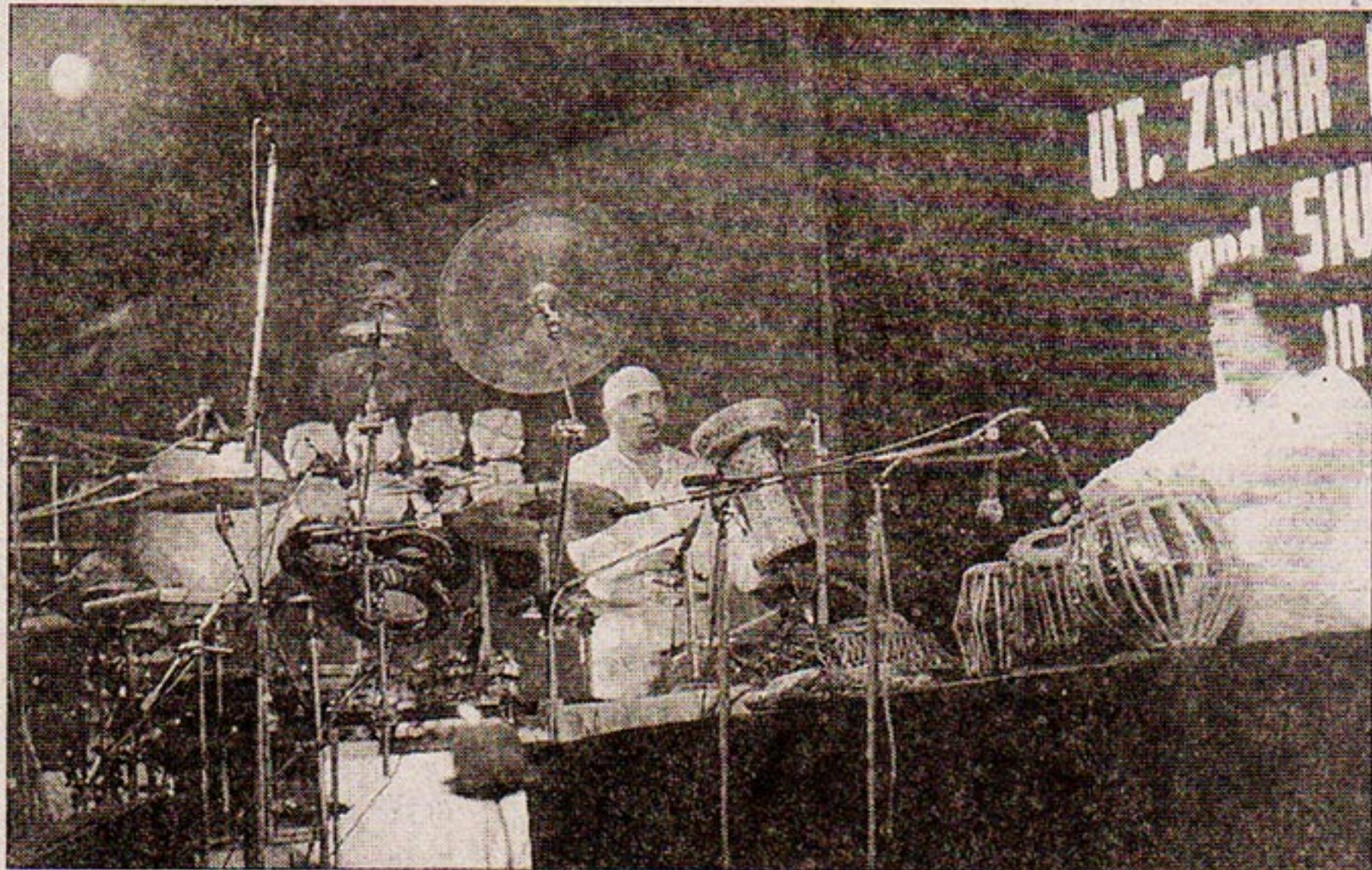
Surprisingly, the more we call ourselves a developing country, the more we find ourselves losing touch of our own roots. Modernity is a right combination of adapting the good from the West and preserving the best of what we already have. But, today modernity seems to be bringing in crudeness with it and we are fast losing the aesthetics in life.

Classical music, dance and drama are the artistic wealth of our culture. Nirzar Kala Sansthan - the city-based socio-cultural NGO has been working towards the preservation, propagation of Indian culture and heritage as a way of life.

Nirzar was formed in 1982 to popularise traditional art forms. The other activities of Nirzar grew out of the need to influence today's lifestyle to be able to better appreciate the traditional art forms that are nothing but inspirations of life itself.

Founder Sadhana Naphade and her son Sameer have been striving to achieve the objective of this organisation. This non-profit NGO has an average of 150 students. It regularly organises cultural programmes to help increase awareness and get people to better appreciate the traditional art forms. They have coordinated several events and workshops to fund their activities.

The recent ones that got an overwhelming response were 'Trance Tabla', tabla solo by Pt Swapan Choudhury and 'The Beats of Ecstasy' - a jugalbandi of tabla



'The Beats of Ecstasy' - a Jugalbandi of tabla maestro Ustad Zakir Hussain's and legendary drummer Pt Siva Mani, one of the events organised by Nirzar Kala Sansthan in the city. (An LT file photo)

*Modernity is a right combination of adapting the good from the West and preserving the best of what we already have. But, today modernity seems to be bringing in crudeness with it and we are fast losing the aesthetics in life. Classical music, dance and drama are the artistic wealth of our culture. Nirzar Kala Sansthan - the city-based socio-cultural NGO has been working towards its preservation.*

maestro Ustad Zakir Hussain and legendary drummer Siva Mani.

They have conducted many workshops on Kathak and tabla, wherein students learned from well-known Kathak gurus and tabla maestros. Nirzar's workshops on terracotta and puppet making and handling evoked a huge response.

The NGO has also conducted a

major show and workshops in New Jersey, New York and Cleveland (United States) as a part of their most successful endeavors.

Nirzar Artefact Shoppe helps the organisation in funding its activities as well. The artefacts are sold with artisans' permission and knowledge to help them earn a living and also to raise funds for Nirzar for its various

projects that are ultimately intended to benefit these very people.

Nirzar has patrons who are prominent in their respective faculties like Pt Birju Maharaj, Pt Rajendra Gangani, Pt Vijay Ghate and others, including prominent business and political personalities from the region.

In its new endeavour, Nirzar is organising 'Kalayatra' wherein students will tour Gondia, Bhandara and Chandrapur, to perform in 25 schools free purely to spread the magic of their art.

Nirzar - the fresh water stream of crystal clear purity of art - has been flowing for years now and intends to continue to do so forever from its Laxmi Nagar office.

# कला-सागर को समाहित करने का स्वप्न है-निर्झर कला संस्थान

## विशेष प्रतिनिधि

नागपुर 10 जनवरी। कोई भी कला किताबों से आत्मसात नहीं की जा सकती है। उसके लिए दृश्य प्रशिक्षण होना अत्यंत आवश्यकता है। कला संस्कृति के स्वरूप को बनाये रखने हेतु शिक्षण, संवर्धन और मनोरंजन की तर्ज पर 'निर्झर कला संस्थान' की स्थापना की गई। संस्थान कलाकारों के सर्वांगीण विकास हेतु पारशिवनी में गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित 5 करोड़ की लागत वाली 'गुरुकुल' का निर्माण करने जा रही है। निर्माण कार्य में चंदा उगाही के उद्देश्य से आयोजित पत्र परिषद में उक्त जानकारी संस्थान की उपाध्यक्ष श्रीमती साधना नाफडे ने दी। संस्थान से जुड़े प्री-मैक्स इवेंट



चित्र में ओमकार खेमकर, समीर मारडीकर, साधना नाफडे व अकिनेत सिंह मैनेजमेंट कंपनी के मुख्य कार्यकारी निर्माण कार्य में चंदा उगाही के अधिकारी श्री समीर गारडीकर ने उद्देश्य से 23 जनवरी 2003 को 'दि बीट्स ऑफ एक्सटेसी' नामक फ्यूजन कार्यक्रम का आयोजन उत्तर

अंबाझरी मार्ग स्थित आंध्र एसोसिएशन हॉल के सामने एग्रोनोमी फार्म में किया गया है। कार्यक्रम में सुप्रसिद्ध तबला-वादक जाकिर हुसैन और शिव मणि की उत्तम जुगलबंदी देखने को मिलेगी।

कार्यक्रम में 1000, 500, 250 और 10 रुपये के डोनेशन कूपन उपलब्ध रहेंगे। आयोजकों को 15000 लोगों के आने की उम्मीद है। कार्यक्रम में भारतीय बैठक व्यवस्था रहेगी। पत्र परिषद में श्रीमती शोभा उबागडे, अनिल नाफडे, मेघना नाफडे, अकोनेत सिंह, विनय गोसावी, अमिताभ खन्ना, ओमकार खेमकर, संदीप जग्गी, समीर देशपांडे, विजय राठी, कर्नल वदोडकर भी उपस्थित थे।

# जीव तबल्यात ! 'फ्युजन' बाबत 'कनफ्युजन' नको - झाकीर हुसेन

## प्रतिनिधि

नागपुर : मी फक्त माध्यम आहे, जीव -प्राण तबल्यात आहेत, असे भावूक उद्गार आज उस्ताद झाकीर हुसेन यांनी येथे पत्रपरिषदेत बोलताना काढले. शास्त्रीय संगीताला 'फ्युजन'मुळे कुठलाच धक्का बसत नाही. 'फ्युजन' संगीताबाबत उगाच 'कनफुजन' नको, असेही ते म्हणाले.

उस्ताद झाकीर हुसेन आणि प्रयोगशील ड्रम वादक शिवमणी यांची जुगलबंदी आज सायंकाळी दक्षिण अंबाझरी मार्गावरील पंकुविच्या पटांगणात पार पडली. तत्पूर्वी पत्रकारांशी दोन्ही कलावंतांनी वातचीत केली.

फ्युजन या संगीतप्रकाराला काही मंडळी नावं ठेवतात. या बाबत विचारले असता झाकीर हुसेन म्हणाले, विविध पेहरावात जसा आनंद मिळतो किंवा चायनीज, जॅपनीज आस्वाद जसा वेगळा असतो तसेच फ्युजनचे आहे. येथे दररोज नवीन शिकायला मिळते. फ्युजन हा काही आम्ही शोधलेला प्रकार नाही. सुमारे एक हजार वर्षांची परंपरा आहे. सुफी संतांची,

अमीर खुसरो सारख्या विभूतींची पार्श्वभूमी यास आहे. एल्वीस प्रिस्ले, शंकर-जयकिशन, नौशाद यांनी हा प्रकार लोकप्रिय केला. कधी नियोजन न करताही कार्यक्रम रंगतो तर कधी नियोजन करूनही रंगत येत नाही. श्रोत्यांच्या प्रतिसादावर आमचे सारे अवलंबून असते. मी सरस्वतीचा पूजक आहे. शिवाचा डमरू, कृष्णाची बासरी आणि सरस्वतीची वीणा अशी समृद्ध संगीत परंपरा आम्हाला आहे. नागपुरात कुठला चहा आपण घेतला या प्रश्नादाखल ते म्हणाले, ये तो आपही जानते है ! लगेच त्यांनी पुढील शेर एकेवला,

एक शहनशाहने बनवा के 'ताजमहल',

हम गरिबोंकी मुहब्बत का उदाया है मजाक !

'मर्मबंधातली ठेव ही' असे गुणगुणत त्यांनी पत्रकारांशी वातचीत करण्यास प्रारंभ केला, हे येथे उल्लेखनीय.

शिवमणी म्हणाले की हा माझा नागपुरातील पहिलाच कार्यक्रम आहे. माझ्या गुरुंचा संदेशवाहक म्हणून मी नागपुरात आलो आहे.

# झाकीर हुसेन व शिवमणी यांची आज जुगलबंदी

नागपुर, २२ जानेवारी (प्रतिनिधी) :



निर्झर कला संस्थानच्या वतीने उद्या, २३ जानेवारी २००३ रोजी सायंकाळी साडेसहा वाजता आंतरराष्ट्रीय

ख्यातीचे तबलावादक उस्ताद पं. झाकीर हुसेन आणि ख्यातमान ड्रमर शिवमणी यांच्या जुगलबंदीचा बहारदार कार्यक्रम कृषी महाविद्यालयाच्या (अग्रोनोमी फार्म) भव्य शामियान्यात (नागपुर विद्यापीठ वाचनालयासमोर) आयोजित केला आहे.

पारशिवनी मार्गावर गुरुकुल उभारण्याच्या उद्देशाने निधी संकलनासाठी या कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आले आहे. झाकीर हुसेन आणि शिवमणी यांच्या जुगलबंदीचा कार्यक्रम नागपुरात प्रथमच होत आहे.

# जाकिर हुसेन - शिवमणि की होगी जुगलबंदी

कोई भी कला किताबों से आत्मसात नहीं की जा सकती है। उसके लिए दृश्य प्रशिक्षण होना अत्यंत आवश्यकता है। कला संस्कृति के स्वरूप को बनाये रखने हेतु शिक्षण, संवर्धन और मनोरंजन की तर्ज पर 'निर्झर कला संस्थान' की स्थापना की गई। संस्थान कलाकारों के सर्वांगीण विकास हेतु पारशिवनी में गुरु- शिष्य परंपरा पर आधारित ५ करोड़ की लागत वाली 'गुरुकुल' का निर्माण करने जा रही है। निर्माण कार्य में चंदा उगाही के उद्देश्य से

हे। इस आशय की जानकारी पत्र परिषद में उक्त जानकारी संस्थान की उपाध्यक्ष श्रीमती साधना नाफडे ने दी। संस्थान से जुड़े प्री-मैक्स इवेंट मैनेजमेंट कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री समीर गारडीकर ने बताया कि गुरुकुल चलाने हेतु हर कलाकार से जुड़ना जरूरी है। निर्माण कार्य में चंदा उगाही के उद्देश्य से २३ जनवरी को 'दि बीट्स ऑफ एक्सटेसी' नामक फ्यूजन कार्यक्रम का आयोजन उत्तर अंबाझरी मार्ग स्थित आंध्र एसोसिएशन हॉल के सामने

में सुप्रसिद्ध तबला वादक जाकिर हुसैन और शिव मणि की उत्तम जुगलबंदी देखने को मिलेगी। कार्यक्रम में १०००, ५००, २५० और १० रुपये के डोनेशन कूपन उपलब्ध रहेंगे। आयोजकों को १५००० लोगों के आने की उम्मीद है। कार्यक्रम में भारतीय बैठक व्यवस्था रहेगी। पत्र परिषद में श्रीमती शोभा उबागडे, अनिल नाफडे, मेघना नाफडे, अकोनेत सिंह, विनय गोसावी अमिताभ खन्ना, ओमकार खेमकर, संदीप जग्गी, समीर देशपांडे, विजय राठी, कर्नल वदोडकर भी उपस्थित थे। (रा)

नागपुर

स्थानीय प्रतिनिधि

# आज जाकिर हुसैन और शिवमणि की जुगलबंदी

नागपुर। सुप्रसिद्ध तबला वादक उस्ताद जाकिर हुसैन और जाने-माने ड्रम वादक शिवमणि के बीच रोचक जुगलबंदी का लुत्फ नगर में पहली बार, आज की शाम साढ़े छह बजे से उठाया जा सकेगा।

ड्रम वादक शिवमणि दरअसल पहली बार ही नगर की धरती पर अपनी कला की प्रस्तुति कर रहे हैं। 'बीट्स ऑफ एक्सप्रेसो' नाम से आयोजित इस संगीत संध्या का आयोजन नगर की निर्झर कला संस्था ने किया है। इस तालवृद्ध जुगलबंदी से प्राप्त राशि को पारशिवनी स्थित 'गुरुकुल' की स्थापना पर खर्च किया जाएगा। उक्त गुरुकुल में कला एवं संगीत का प्रशिक्षण पुरातन गुरुकुल परंपरा के अनुसार दिया जाएगा,



यह जानकारी निर्झर कला संस्था के महासचिव समीर नाफडे, ने यहां आयोजित एक पत्र परिषद में दी। श्री नाफडे ने बताया कि उत्तर अंबाझरी मार्ग पर आंध्र एसोसिएशन भवन के ठीक सामने स्थित एग्रोनामी फार्म मैदान

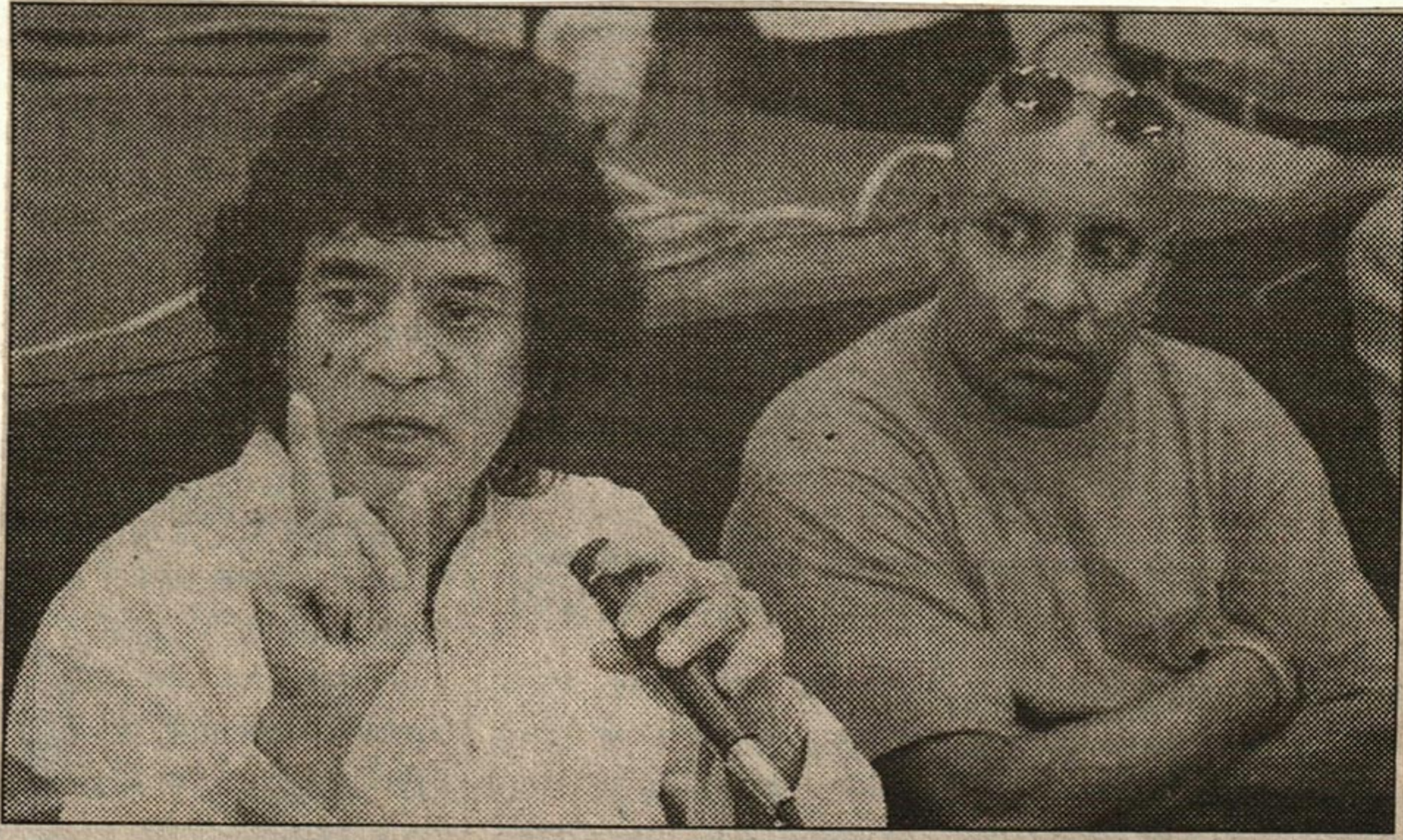
पर आयोजित किए जा रहे इस जुगलबंदी कार्यक्रम के जरिए नगर के संगीतप्रेमी एक विशेष प्रकार की ध्वनि व्यवस्था से परिचित होंगे। इस जुगलबंदी कार्यक्रम में क्रमशः १००० रु., ८०० रु., ५०० रु., २५० रु., तथा १०० रुपये के अनुदान पत्र के जरिए प्रवेश पाया जा सकेगा। अनुदान पत्र की बिक्री २३ जनवरी को पूरे दिन कार्यक्रम आरंभ होने तक कार्यक्रम स्थल पर ही की जाएगी। करीब ४५०० वर्गमीटर में फैले प्रांगण में आयोजित इस जुगलबंदी कार्यक्रम में संगीतप्रेमियों के बैठने की सुविधाजनक व्यवस्था की गई है। पत्र परिषद में संस्था की अध्यक्ष साधना नाफडे, वसीम काजमी, दीक्षित, संजय घटवई समेत इतर संस्था से संबद्ध युवा उपस्थित थे।

www.yugacharam.com

## युवाधर्म



उस्ताद झाकीर हुसैन यांना गुरु मानणारे ड्रमवादक शिवमणी तबलावादन कुतूहलाने बघतानाचे हे दृश्य. नागपुरातील 'निर्झर' कला संस्थानतर्फे आयोजित जुगलबंदी या गुरु-शिष्यांची डॉ. पंजावराव कृषी विद्यापीठाच्या प्रांगणात रंगली. (छाया- संदीप सोनी)



## ‘फ्यूजन’चा भारतीय शास्त्रीय संगीताच्या शुद्धतेवर परिणाम नाही- झाकीर हुसैन

नागपूर, २३ जानेवारी (प्रतिनिधी) : भारतीय शास्त्रीय संगीताचा पाया अतिशय भक्कम असून, ‘फ्यूजन’सारख्या प्रयोगांनी शास्त्रीय संगीताच्या शुद्धतेवर काहीही परिणाम होणार नाही, असे मत आंतरराष्ट्रीय ख्यातीचे तबलानवाज उस्ताद झाकीर हुसैन यांनी आज येथे व्यक्त केले. ‘फ्यूजन’ हा प्रकार नवा नसून, ‘खयाल’ हा ‘फ्यूजन’चाच एक प्रकार आहे, असे मतही त्यांनी मांडले.

सुप्रसिद्ध ‘ड्रमर’ शिवमणी आणि झाकीर हुसैन यांच्या जुगलबंदीचा ‘दी बीट्स ऑफ एक्स्टसी’ हा कार्यक्रम आज सायंकाळी नागपुरात झाला. तत्पूर्वी, झाकीर हुसैन यांनी पत्रकारांशी दिलखुलास चर्चा केली. ‘मर्मबंधातली ठेव ही...’ अशी ताण घेऊन त्यांनी हा संवाद सुरू केला. अलीकडे ‘फ्यूजन’सारखे मिश्रसंगीताचे प्रयोग वाढत आहेत. त्याचा शास्त्रीय संगीताच्या शुद्धतेवर परिणाम होणार नाही काय, असे विचारले असता झाकीर हुसैन म्हणाले की, मी स्वतः शास्त्रीय संगीताचा विद्यार्थी आहे. तालाचा भक्त आहे. शास्त्रीय संगीताची शुद्धता कायम ठेवून ‘फ्यूजन’चा नवा प्रयोग आम्ही मंडळी

करतो. भारतीय शास्त्रीय संगीताचा पाया अतिशय भक्कम आहे. गुरुजनांनी त्यासाठी भरपूर कष्ट घेतले आहे. ‘फ्यूजन’ हे इतर संगीतप्रकारांचा आनंद घेण्याचे माध्यम आहे. खरे सांगायचे तर ‘फ्यूजन’ हा एक प्रवास आहे. आज सर्व प्रकारचे संगीत तुमच्या दाराशी आले आहे. त्याचा आनंद घेतला पाहिजे. मी भारतीय शास्त्रीय संगीत शिकलो. पण पाश्चात्य संगीत समजून घेतल्याशिवाय त्यांना मी भारतीय शास्त्रीय संगीताचे महात्म्य कसे सांगू शकेन ?

‘फ्यूजन’मध्ये कुणीही उस्ताद नाही, असे सांगून ते म्हणाले की, ‘फ्यूजन’ आणि जुगलबंदीत फारसा फरक नाही. मी आणि शिवमणी ‘फ्यूजन’ सादर करतो तेव्हा जुगलबंदी असतेच. खरे सांगायचे तर ‘फ्यूजन’ हा प्रकार नवा नाही. त्याला किमान एक हजार वर्षांची पार्श्वभूमी आहे. अल्लाउद्दीन खिलजीसोबत भारतात आलेल्या अमीर खुस्रौंना इथल्या देवालयांमध्ये सादर होणारे संगीत आवडले. खुस्रौंनी सुफी संगीताची त्यात सरमिसळ केली आणि ‘खयाल’ जन्माला आला. आता तर ‘फ्यूजन’ जगभर पोचले आहे. लोक त्याचा आनंद घेत आहेत.

शास्त्रीय संगीत आणि ‘फ्यूजन’ या दोघांचाही आनंद घेता येतो. सारेच कलाकार विद्यार्थी असतात असे मी मानतो. ते सारे सरस्वतीचे पूजारी असतात. आमच्या देवी-देवतांच्या हाती वाद्ये आहेत. याचा अर्थ ते कलावंत आहेत. तबल्याचे बोल भगवान शिवाकडून गणेशाला मिळाले आणि त्या माध्यमातून ते मनुष्य जातीपर्यंत पोचले. म्हणून वाद्य वाजविताना तालज्ञानाचा उगम सदैव आमच्या मनात असतो. प्रत्येक वाद्यात जीवनाचा वास असतो. आम्ही ते वाजवायला सुरुवात करतो तेव्हा एखाद्या मंदिरात बसल्याची भावना आमच्या मनात असते. विदेशी, शास्त्रीय असा फरक तिथे नसतो, असेही ते म्हणाले. तबलावादक हा कधीही कार्यक्रमाचा ‘लीडर’ नसतो. तो कितीही मोठा असला तरी त्याने संगतच करायची असते, असे त्यांनी स्पष्ट केले.

मी आणि शिवमणी ठरवून कार्यक्रम सादर करीत नाही. कारण ठरविले तरी वेळेवर आमच्या ‘फ्यूजन’ला वेगळे वळण मिळते. त्याचाही एक वेगळा आनंद आहे. शिवमणी प्रथमच नागपुरात आले आहेत, अशी माहिती त्यांनी दिली. यावेळी शिवमणी उपस्थित होते. ■

# उस्ताद झाकिर हुसेन आणि शिवमणीच्या तालावर थिरकलेली एक संध्याकाळ

नागपूर, दि. २३ (प्रतिनिधी) - उस्ताद झाकिर हुसेन आणि शिवमणी यांचे तालांच्या जुगलबंदीने आजची थिरकलेली संध्याकाळ नागपूरकरांनी अनुभवली. 'द वीट्स ऑफ ऐक्सट्री' नावाचा हा 'प्युजन' चा कार्यक्रम 'निर्झर कला संस्थान' ने अग्रोनामी फार्मस् उत्तर अंबाझरी मार्ग येथे आज आयोजित केला होता.

प्रथम उस्तादजींनी आपल्या तबल्याचे सोलो वादन केले. यात त्रितालपर्ण, अध्या, रेल आदि प्रकार वाजवून त्यांनी श्रोत्यांना मंत्रमुग्ध केले. यातच विविध प्रसंगाचे आवाज त्यांनी तबल्यावर रसिकांना काढून दाखविले.

लय आणि सम सांभाळत मुळ तालाला धक्का न लवता रेल्वेगाडीचा आवाज, पुजा करताना निर्माण होणारे शंख, आरती, मृदंग, व टाळांचे ध्वनी त्यांनी वकुबिने हाताळले. राधा कृष्णाचा संवाद त्यातल्या एकटा राग आणि सवाल

जवाब त्यांनी बोलांच्या रुपात पहिले ढगांचा आवाज, वीज चमकले आदी स्वतः म्हणून दाखविला व त्यानंतर प्रकार तर केवळ अप्रतिमच म्हणावे तबल्यानंतर वाजविली. त्यातली खास लागतील. या हटके प्रकारात चाटी आणि

## संगीतातील 'खयाल' हे प्युजन - झाकीर हुसेन

रसिकांना 'प्युजन' हा प्रकार नवीन वाटत असला तरी संगीतातला 'खयाल' प्रकार १००० वर्षापूर्वी झालेले प्युजनच आहे, असे मत उस्ताद झाकीर हुसेन यांनी पत्रकारांशी बोलताना व्यक्त केले. उलाउद्दीन खिल्जी हिंदुस्थानात आला तेव्हा त्यांचेसोबत आमिर खुस्रो हे सुद्धा आले. ते सुफी संत होते. धूपद, धमार आदी संगीत प्रकारांच्या एकत्रिकरणातूनच 'खयाल' ची निर्मिती त्यांनी केली, असे उस्तादजींनी यावेळी स्पष्ट केले. हे तेव्हापासूनच चालू असून प्युजनमुळे भारतीय शास्त्रीय संगीताचा अजिबात ऱ्हास होत नाही. हा एक वेगळा आनंद आहे. इतकेच असे ते म्हणाले. आपण स्वतः विद्यार्थी असून कधी कधी ठरवूनही कार्यक्रम रंगत नाही तर कधी न ठरवताही खूप चांगले काहीतरी वाजविल्या जाते. ही सरस्वतीची पूजा आहे तर स्टेज मंदिर आहे. प्युजन आणि जुगलबंदीत तत्त्वतः फारसा फरक नसून जुगलबंदीचेच प्युजन होते, असे त्यांनी यावेळी स्पष्ट केले. पत्रकारांशी बोलण्यापूर्वी त्यांनी मराठीत 'मर्म बंधातली ठेव ही' या नाट्यगीताचा काही ओळी गाऊन उत्स्फूर्त संवाद साधला.

रंगत कळल्यामुळे प्रेक्षक सुखावले.

रेल वाजविताना पावसाची कल्पना,

तबल्याचे संतुलन क्षणाकरिताही नढळू देत त्यांनी बखुबी सम सादली. हे जाणकारांच्या दृष्टीने महत्त्वाचे होते.

त्यानंतर शिवमणीने वाजत गाजत अगदि शेवटच्या प्रेक्षकापासून स्टेजवर एंट्री घेतली. या आगळ्या वेगळ्या प्रकारामुळे प्रेक्षकांमध्ये प्रचंड उत्साह संचारला. शिवमणीच्या ड्रमचा पसाराच इतका मोठा होता कि, फक्त ड्रमसाठी एकूण २२ माईक लागले होते. त्यांचे वाद्यात वेगवेगळे ड्रम्स, उमरू, बेल्स पासून टिनाच्या वस्तू व चमच्यांपर्यंत सारेच होते. सोबतच काही इलेक्ट्रॉनिक वाद्ये होती. सुरुवातीलाच त्यांनी घोडे विजयवाज घेऊन आगळ्या प्रेक्षकांची

ओम या विशिष्ट स्वरात लय साधत वाजविले. हळूहळू ताल पकडत त्यांनी ड्रम्स वाजविताना गतीघेतली. यावेळी तरुण प्रेक्षकांनी ठेका धरला. शिवमणीचे लोक डाळ्या देत असतानाच 'ऑफ बीट' वाजविणे खास, भाव खाऊन गेले.

ड्रम्स आणि इलेक्ट्रॉनिक वाद्यांचे जवळपास १५ ते २० प्रकार हाताळताना तालाची मर्यादात्यांनी कुठेच सुट्टू दिली नाही हे विशेष.

दोघांचेही एकलवादन झाल्यानंतर खऱ्या जुगलबंदीला सुरुवात झाली. भारतीय आणि पाश्चिमात्य वाद्यांचा हा एकत्रित संगम निश्चितच आनंद देणारा होता. तबल्यावरचे बोल ड्रम्स वर ऐकताना तसेच शिवमणी ते वाजत असतानाही नजाकत मजा आणणारी होती. ही जुगलबंदीची प्युजन ऐन रंगात आली. प्रेक्षक जेमतेम रमले होते. अजून खूपकाही ऐकण्याची उत्सुकता बाकी होती. पण प्युजन संपल्या बरोबरच उस्तादजींनी अनपेक्षित निरोप घेतल्यामुळे प्रेक्षक अतृप्त राहिले. एकूण कार्यक्रमात मात्र प्रचंड रंगत दोघांनीही आणली.

कार्यक्रमाच्या सुरुवातीला निर्झर कला संस्थानच्या अध्यक्षा श्रीमती साधना नाफडे यांनी उस्ताद झाकीर हुसेन यांचे स्वागत केले. पोलीस आयुक्त जयंत उमराणीकर व झाकीर हुसेन यांनी दिप प्रज्वलनाने कार्यक्रमाची सुरुवात केली.

कार्यक्रमाला मनपा आयुक्त मनुकुमार श्रीवास्तव सहपरिवार

# लोकसत्ता

नागपूर (फोन २२५६) बुधवार २४ जानेवारी २०१३ नागपूर मुंबई पुणे आणि अजयतनर देवूत प्रकाशित www.loksatta.com • सरत अजयती Regd. No. NR/NP/01/98

फ्यूजन...



गुरुवारी नागपुरात झालेल्या 'बीटस् ऑफ एक्सटसी' या तबला व ड्रम यांच्या 'फ्यूजन' कार्यक्रमात शिवमणी व उस्ताद झाकिर हुसेन. (वृत्त पान ९ वर)

# तालवाद्यांच्या 'फ्यूजन'ने श्रोत्यांनी अनुभवले नावीन्य!

प्रतिनिधी

नागपूर, २३ जानेवारी

तालवाद्यांचा आत्माच प्रत्यक्ष त्या वादकाच्या माध्यमातून बोलायला सुरुवात करतो त्यावेळेस तालाचे एक संपूर्ण विश्वच आपल्यासमोर साकार होते. तालाच्या स्पंदनांसोबत मनाच्या स्पंदनांचाही मिलाफ होतो आणि श्रोत्यांच्या श्रुतीचीही तालवाद्ये होतात. यातून एक वेगळा श्रवणानंद मिळतो. आज नागपुरातील असंख्य श्रोते या श्रवणानंदाचा अनुभव घेते झाले. प्रसिद्ध तबला नवाज उस्ताद झाकीर हुसेन आणि लोकप्रिय ड्रमवादक शिवमणी यांच्या 'बीट्स ऑफ एक्सट्रीम' या कार्यक्रमाने रसिकांना अक्षरशः डोलायला



पत्रपरिषदेला संबोधित करताना उस्ताद झाकीर हुसेन व शिवमणी

लावले. 'फ्यूजन' या प्रकारात या दोन्ही कलावंतांनी परस्परांच्या तालवाद्यांची एकरूपता साधण्याचा यशस्वी प्रयत्न केला. नागपूरच्या

मिर्झर कलाकेंद्राने आज उत्तर अंबाझरी मार्गावरील कृषी महाविद्यालयाच्या विस्तीर्ण पटांगणात याचे आयोजन केले होते.

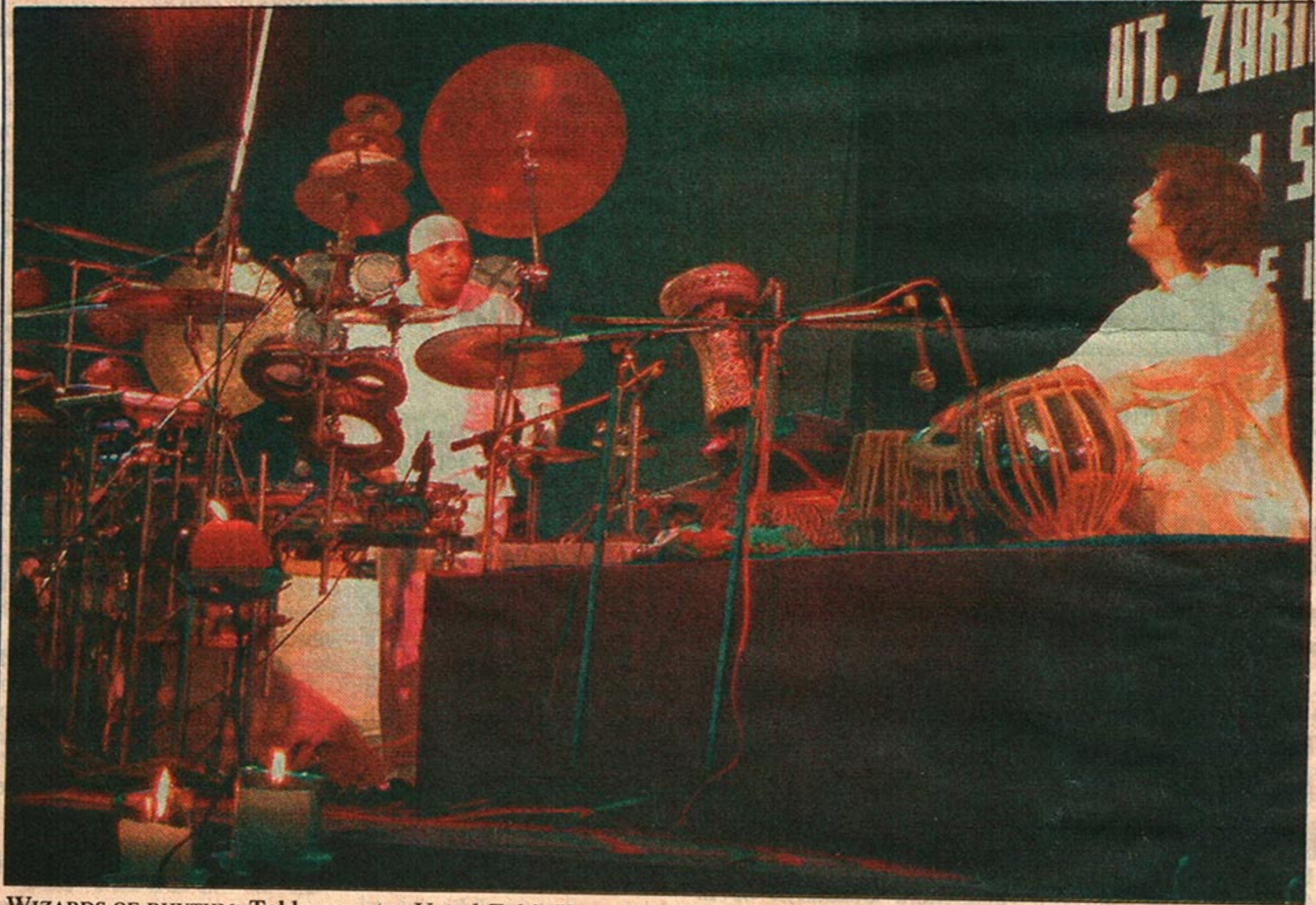
पोलिस आयुक्त श्री. जयंत उमराणीकर हे प्रमुख अतिथी होते. 'फ्यूजन' हा प्रकार शास्त्रोक्त किंवा पूर्णतः पारंपरिक शास्त्रीय संगीताचा नसतो. सर्वसामान्य रसिकाला त्याच्या आवडीचे नवीन काहीतरी देणे इतकाच मर्यादित उद्देश असलेला हा कार्यक्रम होता.

कार्यक्रमाची सुरुवात उ. झाकीर हुसेन यांच्या तबला वादनाने झाली. तबला वादनाला नेहमी अन्य वाद्याचा लहरा संगतीला असतो. पण पाऊण तास चाललेल्या या वादनाला लहरा नव्हता. उस्तादर्जींनी प्रथम अर्ध्या त्रिताल सादर केला. वादनाच्या सर्व पैलूंचे सहजगत्या आविष्करण करीत वैविध्याचे (पान ११ वर)



जगप्रसिद्ध तबलानवाज उस्ताद झाकीर हुसैन आणि ख्यातनाम 'ड्रमर' शिवमणी यांचा संयुक्त कार्यक्रम गुरुवारी सायंकाळी नागपुरातील निर्झर कला संस्थानच्या वतीने आयोजित करण्यात आला होता. विद्यापीठ





WIZARDS OF RHYTHM: Tabla maestro Ustad Zakir Hussain and accomplished percussionist Shiva Mani at a *jugalbandi* at the Agronomy Ground, North Ambazari Road in the city on Thursday. ■ LT Photo by Raju Pote

# Zakir, Mani take Nagpurians to heights of ecstasy

BY PHILIPS JOSEPH

**Nagpur, Jan. 23:** It was paradise regained for Nagpurians as his dancing fingers set the stage ablaze and audience in trance with mellifluous melody flowing profusely from his tabla. And juggling sticks of Shiva Mani have one and all swamped and wafting in the ethereal world where *brahmnaad* brings man closer to god.

Tabla maestro Ustad Zakir Hussain fingers sing and his tabla exudes symphony of a different world. His fingers curl uncurl rise sway strike

creating multiple light streaks as lilting rhythm is coaxed out of a yielding tabla.

He undulates his sensuous locks, drops his jaw in a mysterious awe, cocks his head in a mystical frown until the exact *taal* get manifested from his tabla.

The 'Beats of Ecstasy', organised by Kala Nirzar Sansthan at Agronomy Ground in the city on Thursday had a splendid start with the world's most celebrated *tabla* player striking the right chord.

He took very little time to get into the groove or rather

elements. In his solo performance, he introduced the audience with the depth of tabla by creating the sounds of blaring diesel engine to chugging steam train alike.

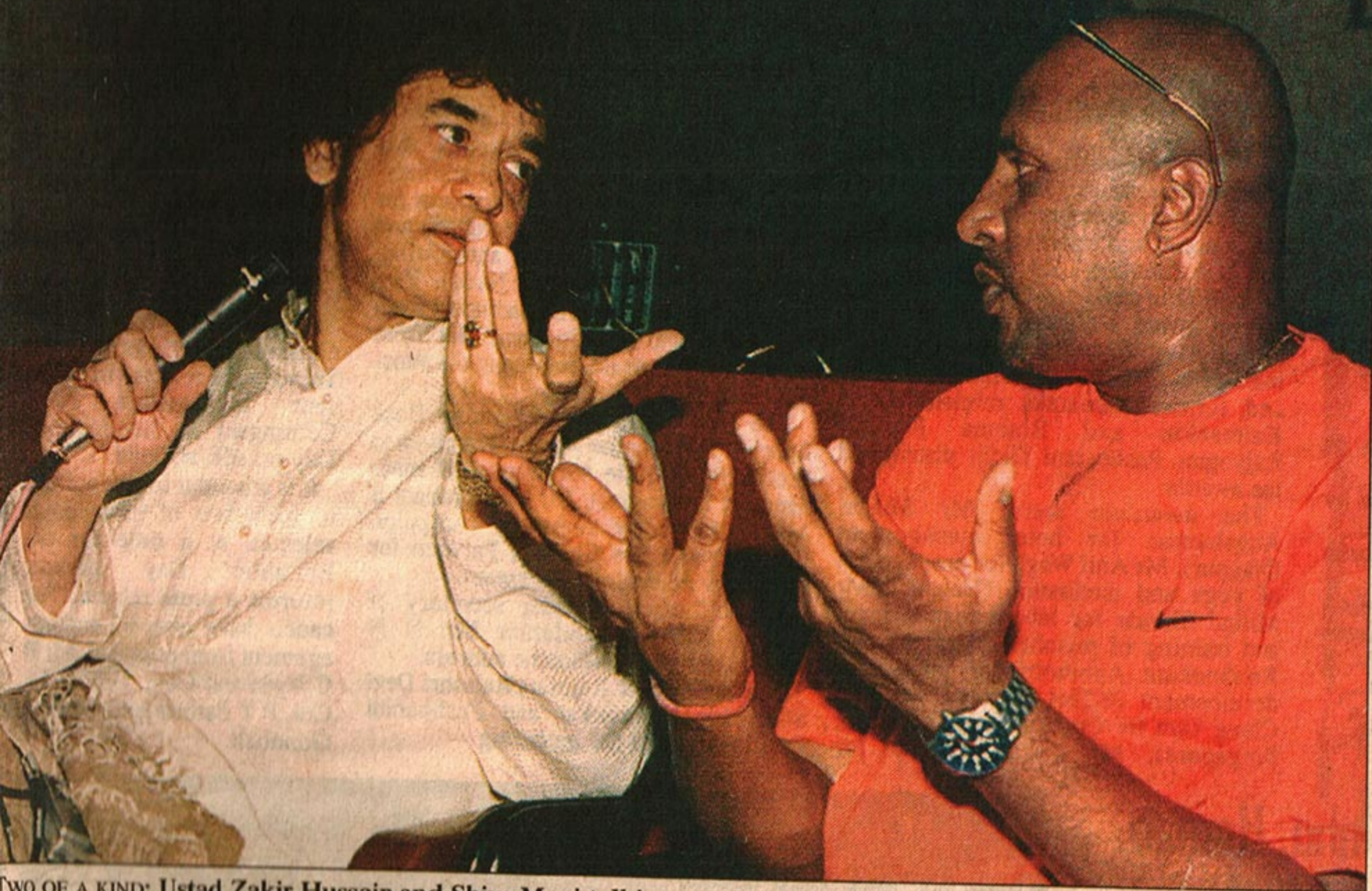
People were happy to the core when he generated clickety-click of running train on his tabla. He delectably enlivened the blowing of conch, beating of drums, chiming of bells and circumventing *aarti* at the temple through his fleeting fingers. So was the beating of *nagara* at Red Fort. You feel at home.

reports of cannon balls with immense authority. And the music of rains beating roofs to smooth flowing river make you flow with it. Suddenly there was a cloud burst and soul-stirring lightning that exact spontaneous reaction from the happy audience; clappings galore.

His presentation of old bandish on 'Cannon balls,' was worth enjoying.

His master piece was *Bhav Pranaya*, again a bandish in which lord Krishna is being subjected to face the wrath of Radha. When Krishna

LIVE IN FUSION



TWO OF A KIND: Ustad Zakir Hussain and Shiva Mani talking to each other at a press meet organised prior to beginning of their *jugalbandi* at the Agronomy Ground, North Ambazari Road, in the city on Thursday evening. ■ LT Photo by Raju Pote



गुरुवार, २३ जनवरी की शाम नगर के उत्तर अंबाझरी मार्ग स्थित एगोनॉमी फार्म्स में निर्झर कला संस्थान के कार्यक्रम 'दि बीट्स ऑफ इस्टैसी' में विश्वविख्यात तबला वादक उस्ताद जाकिर हुसैन व छोटे-बड़े करीब सौ घन वाद्यों के अत्याधुनिक समूह वादक शिव मणि के बीच जुगलबंदी का एक रोमांचक क्षण. ( समाचार पृष्ठ १३ पर)

# लोकमत

शुक्रवार, दि. २४ जानेवारी २००३

पृष्ठे - २०, किंमत - रु. २.५०

वाह उस्ताद ! तबला आणि झाकीर हुसेन हे एक चिरंजीव समीकरण झाले आहे. निर्झर कला संस्थेतर्फे गुरुवारी सायंकाळी दक्षिण अंबाझरी मार्गावरील पंकुविच्या पटांगणात आयोजित कार्यक्रमात उस्ताद झाकीर हुसेन यांनी आपल्या बोट्यांच्या जादूने तबला जिवंत केला ! वृत्त पान १३ वर. (छाया : राजू पोटे)

# उस्ताद झाकीर हुसेन-शिवमणी यांची अनोखी जुगलबंदी : डमरू, खुळखुळा, चमचेही वाजले!

▶ प्रतिनिधी

नागपूर - वाह उस्ताद ! वाह शिवा ! अशी दाद आज रसिकांनी उस्ताद झाकीर हुसेन आणि शिवमणी यांना दिली.

उस्ताद झाकीर हुसेन आणि प्रख्यात प्रयोगशील ड्रम वादक शिवमणी हे दोघेही तालाच्या दुनियेतील नामवंत. त्यांची अनोखी

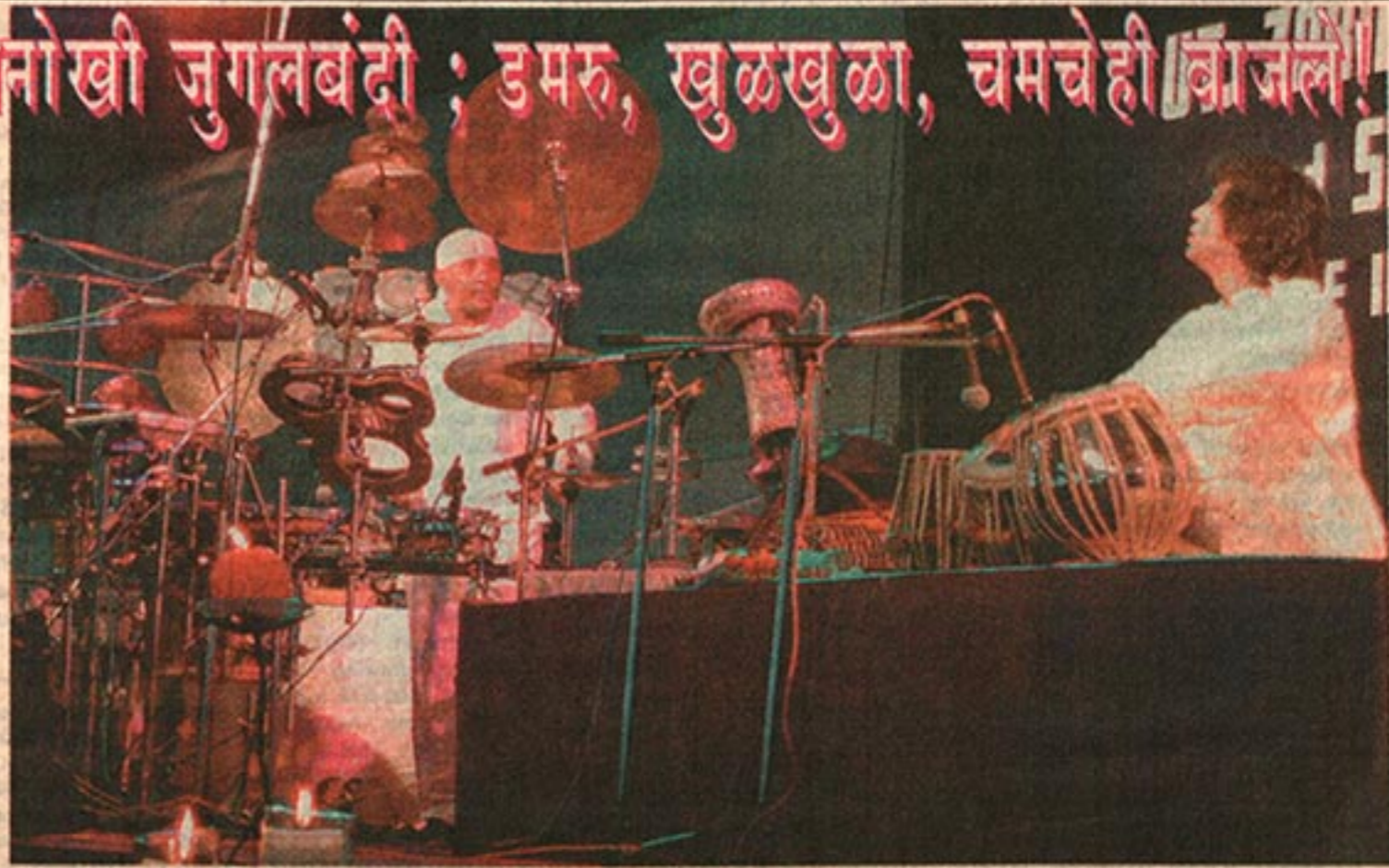
जुगलबंदी आज रसिकांनी अनुभवली. मात्र दोन तासांच्या एकूण कार्यक्रमात अखेरची ३५ मिनिटे ही जुगलबंदी चालल्याने रसिक अतृप्त राहिलेत. निर्झर कला संस्थेतर्फे आज सायंकाळी दक्षिण अंबाडारी मार्गावरील पंकुविच्या पटांगणात हा कार्यक्रम झाला.

शिवमणीचा हा नागपुरातील पहिलाच कार्यक्रम असल्याने विशेष

कुतूहल होते. अक्षरशः पसारा म्हणावे असा 'तामझाम' घेऊन शिवमणीने खिळवून ठेवले.

शिवमणीचे संगीत साहित्य ऐकण्यासारखे तर होतेच, परंतु ते बघण्यासारखेही होते. त्याने सायकलचे हॅडल नि त्यास असलेली धंटी वाजवली ! खुळखुळा वाजवला ! पुंगी वाजवली ! लहान मुलांची खेळणी तसेच डमरू, शंख, परत वाजवली. मडके आणि चमचे देखील वाजवले. शायलोफोन, ड्रम सेट, ऑक्टोपॅड हे तर होतेच होते. हे सारे कमी पडले म्हणून की काय चक्क आपल्या तोंडाचा चंबू करूनही वाजवला !

प्रारंभी, उस्ताद झाकीर हुसेन यांच्या तबल्यातून रेल्वेगाडीचा आवाज, घोड्यांच्या टापा, दिवाळीतील फटाके, मंदिरातील नगारे, विजांचा कडकडाट आदींची आठवण करून देणारे बोल उमटत गेले आणि (पान १९ वर)



तालात तल्लीन ! उस्ताद झाकीर हुसेन आणि प्रयोगशील ताल वादक शिवमणी यांची जुगलबंदी गुरुवारी सायंकाळी दक्षिण अंबाडारी मार्गावरील पंकुविच्या पटांगणात रंगली. निर्झर कला संस्थेतर्फे आयोजित या कार्यक्रम मात तालात तल्लीन झालेले शिवमणी आणि उस्ताद झाकीर हुसेन. (छाया : वाळू नागभीडकर)

## झाकीर यांनी विचारले, शिवमणी, तू कुठे आहेस ?

आजचा कार्यक्रम सायंकाळी ७ वाजता सुरू झाला. पाऊण तास झाकीर हुसेन यांनी खिळवून ठेवले. शिवमणीचा प्रवेश झाला ७.५० वाजता. तत्पूर्वी झाकीर हुसेन यांनी सुरुवात केली होती. शिवमणी दिसत नसल्याने श्रोत्यांमध्ये चुळबुळ सुरू होती. झाकीरजींनी शिवमणी कुठे आहे, अशी विचारणा दोनदा श्रोत्यांनाच केली. नंतर सुमारे अर्ध्या तासाने अचानक चपळाईने फिरणारी बोटे तबल्यावरून वाजूला सारून झाकीरजींनी दूरवर बघत मराठीत विचारणा केली, शिवमणी, तू कुठे आहेस ? तोच संदलचा बँड वाजू लागला आणि चक्क श्रोत्यांमधून सदलच्या तालावर शिवमणीचे नाचत-नाचत आगमन झाले. दोन्ही हातात झांज धरून वाजवणारा शिवमणी आणि डोल वाजवणारी इतर स्थानिक मंडळी हे दृश्य बघण्यासारखे होते.

# जाकिर हुसैन और शिवमणि की यादगार जुगलबंदी

जगदीश शाह

नागपुर

२३ जनवरी

नगर के उत्तर अंबाझरी मार्ग स्थित पंकृवि के एग्रोनॉमी फार्म में आज शाम एक बहुप्रतीक्षित कार्यक्रम निर्झर कला संस्थान के 'दि बीट्स ऑफ इस्टैसी' में तबला-जादूगर, उस्ताद जाकिर हुसैन की 'मेलोडी' और एक साथ सैकड़ों उपकरणों से घन वाद्यों का काम लेनेवाले अत्याधुनिक ड्रमर शिव मणि की 'हारमनी' ने नगर के प्रबुद्ध श्रोताओं का दिल कुछ इस तरह जीता कि बहुत सुनने के बाद भी लोग केवल इस लिए 'अतृप्त' रह गये, क्योंकि उस्ताद जाकिर हुसैन ने बिना 'वंस मोर' का मौका दिए अचानक विशुद्ध मराठी में कह दिया. 'कार्यक्रम सम्पला, आता आपण घरी जाउ सकता'.. यों, कार्यक्रम से पूर्व, वहीं मंच के करीब पत्रकारों से चल रही बातचीत (बाकायदा माइक पर) में उन्होंने कहा था कि हम नहीं बोलेंगे, मंच पर तबला बोलेगा..बस, इतना करें कि आप हमसे 'निकलवा' लें. कहना न होगा, कि लोग तालों की धुआंधार बौछार में अभी ठगे से ही थे, कि वे उठे और चलते बने.

अवश्य, इसे सकारात्मक अर्थ में ही लिया जाना चाहिए कि उस्ताद के पहले एकल, फिर शिव मणि के एकल

और बाद में दोनों की जुगलबंदी ने श्रोताओं को आनंद में इस बुरी तरह झोंक, दीवाले के पटाखे, पहले स्टीम की रेलगाड़ी फिर बिजली की, हिरणों

लायक नहीं रहीं.

शिवमणि का वादन चमत्कृत करता है. सैकड़ों उपकरणों को अपने चारों ओर सजा कर सबको एक साथ 'कार्यकाले समुत्पन्ने, न सा विद्या, न तद्धनम्' जैसा कमाल है. उन्होंने जो कुशलता विकसित की है वह चाक्षुस जितना रोमांचित करता है उतना ही श्रवणों को भी. वे भारत के अमूमन सभी प्रांतों-प्रदेशों में पाए जाने वाले अवनद्ध वाद्यों के स्वरों का मेल था. चमड़े से मढ़े वाद्यों में दक्षिण भारत के हर तरह के मृदंग, उत्तर भारत के ढोल नगाड़े, नगडिया, तासा, डुग्गी, पखावज, मांदल, डफ, डफली, खंजरी से लेकर डमरू तक के आकार प्रकार के वाद्यों, तमाम अंग्रेजी - अफ्रीकी ड्रमों और झुनझुने, घंटा, घंटी, घड़याल, झांझ आदि छोटे बड़े धातु वाद्यों का जखीराले रखा है शिवमणि ने. इसके अलावा मंच पर ही तत्काल ख्वनि को रिकार्ड करने और मिटानेके यंत्र भे होते हैं. वे इन सबसे एकसाथ जूझते, गजब की फुर्ती से हारमनी पैदा करते हैं.

उस्ताद जाकिर के साथ जुगलबंदी में ससे अच्छेक्षण वही लगते हैं जहां दोनों भारतीय तालों पर आकर संगत करते हैं. जुगलबंदी की रमणीयता यहीं अलौ किक हो उठती है.



उस्ताद जाकिर हुसैन व शिवमणि कार्यक्रम से पूर्व पत्रकारों से चर्चा करते हुए.

'झकझोर' दिया था और वे इतनी बार 'चरम' से होकर गुजरे थे कि किसी में 'फिर एक बार' कहने की ताब ही न बची थी.

पंजाब घराने के अमर तबला नवाज अल्लारक्खा के चिरंजीव उस्ताद जाकिर हुसैन ने शुरू में जो चीजें बजायीं उनमें नगरवासियों के लिए उनका 'नया कुछ' शायद ही था! कहना न होगा कृष्ण के देर से घर लौटने पर राधा से नोक-

की कुलांचों और एक घोड़े की दुलकी से लेकर सरपट और अनेक घोड़ों के टापों की निकट से दूर तक जाती आवाजें व अन्य कंपोजीन एक दशक से अधिक समय से सुने जा रहे हैं.

उस्ताद के तबलों की शास्त्रीयता और शुद्धता तो बेजोड़ है. अगर बहुत नया कुछ सुनने को नहीं मिला तो इसका अर्थ यह कदापि न निकाला जाए कि उनकी चीजें बार बार सुनी जाने



तबले की थाप से मादक धुन निकालते भावविभोर जाकिर हुसैन. ( छायाचित्र : दत्ता हिवसे )



निर्झर कला संस्थेतर्फे गुरुवारी सायंकाळी आयोजित 'फ्युजन' कार्यक्रमातील प्रख्यात तबला वादक उस्ताद झाकीर हुसेन यांची ही अदा. तर इन्सेटमध्ये जागतिक कीर्तीचे ड्रमवादक शिवमणी. कृषी विद्यापीठाच्या अँग्रोनाॅमी मैदानावर या दोघांच्या जुगलबंदीचा हा कार्यक्रम झाला

# फ्युजन म्हणजे एक प्रवास

नागपूर- फ्युजन म्हणजे एक प्रवास आहे. या प्रवासात दरवेळी काहीतरी नवे शिकण्याकरिता आम्ही दोघेही एकत्र येत असतो. ही जुगलबंदी तर आहे, परंतु ठरवून फ्युजन सादर करायची नाही, ते वाद्यांच्या संगतीत सहजपणे घडत जाते. असे प्रतिपादन प्रख्यात तबलावादक झाकीर हुसेन आणि प्रसिद्ध ड्रमवादक शिवमणी यांनी येथे केले.

निर्झरच्या वतीने आयोजित केलेल्या फ्युजन या पं. झाकीर हुसेन व शिव मणी यांचे प्रतिपादन

## ...आणि झाकीर हुसेन 'शिव मणी' झाले

विविध ड्रमच्या वाद्यांनी रसिकांना मंत्रमुग्ध करणारे शिव मणी आणि शास्त्रीय पद्धतीने तबला वादन करणारे झाकीर हुसेन यांच्या परस्पर भिन्न वाद्यप्रकारांचे मिलन घडविणारा कार्यक्रम नागपुरात झाला. या कार्यक्रमापूर्वी शिव मणी प्रत्येक ड्रम वाजवून माईक सिस्टीम तपासून पाहात होते. तेवढ्यात झाकीर हुसेन तेथे आले आणि त्यांनी शिव मणींची जागा घेतली. काहीक्षण त्यांनी प्रत्येक वाद्यातून अतिशय सुरेख ताल काढलेत. त्यांच्यातील या 'शिव मणी'ला पाहून उपस्थित प्रेक्षकवर्गही अचंबित झाला.

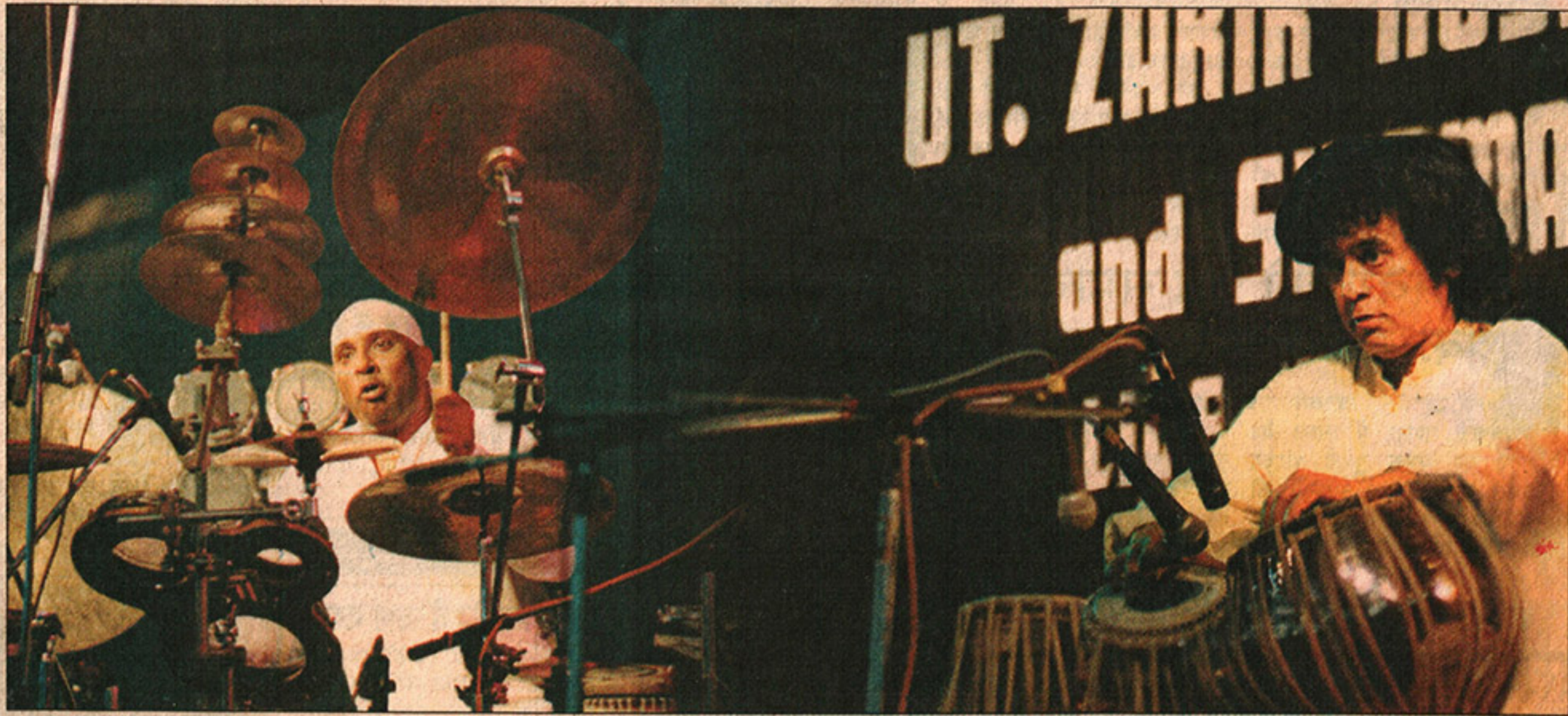
गणेशाला मिळाले व तेथून हे ताल आम्हा कलाकारांना मिळाले, असे मी मानतो. हे रंगमंच म्हणजे आमच्याकरिता मंदिर आहे. आम्ही गुरुच्या समोर आहोत आणि त्यांच्याकडून जे मिळाले ते रसिकांसमोर सादर करण्याचा प्रयत्न करणार आहोत, असेही झाकीर हुसेन म्हणाले.

फ्युजन म्हणजे शिव मणी आणि माझ्यातील संगीताची चर्चा आहे. याचा आज येणारा आणि पुढे येणारा आनंद हा वेगवेगळा राहणार आहे. फ्युजन या संगीत प्रकाराने शास्त्रीय संगीतावर कोणताही

परिणाम पडणार नाही, असे एका प्रश्नाच्या उत्तरात स्पष्ट करताना ते म्हणाले की, माझे मूळ शिक्षण शास्त्रीय संगीताच्या आधारावर झाले आहे. पाश्चिमात्य वस्त्रे अथवा वस्तू वापरल्याने जसे आपल्यातील भारतीयत्व जात नाही, तसेच संगीताचेही आहे. संगीताचा मूळ गाभाच शास्त्रीय असल्यामुळे इतर संगीत प्रकार

कार्यक्रमाकरिता आंतरराष्ट्रीय स्तराचे हे दोन्ही कलाकार नागपुरात आले आहेत. शिव मणी तर प्रथमच नागपुरात आले आहेत. कृषी विद्यापीठासमोरील जागेवर आयोजित करण्यात आलेल्या कार्यक्रमापूर्वी पत्रकारांशी बोलताना झाकीर हुसेन म्हणाले की, फ्युजन सादर करताना कोणतीही योजना नसते. वाद्यांची आपोआप लय बांधली जाते. जेवढेही कलाकार आहेत ते

प्रत्येकवेळी काही ना काही शिकत असतात. आमच्याकरिता गुरु म्हणजे ब्रह्म आहे. याच सत्याला मनात ठेवून काहीतरी आज शिकायला मिळणार आहे, या उद्देशाने कार्यक्रम सादर होत आहे. तबलावादन करीत असताना मला शिवाच्या डमरूचे ताल आठवतात. ताल कोठून आलेत, याचे विवेचन करताना ते म्हणाले की शिवाच्या तोंडून उगवलेल्या ताल



## जाकिर हुसैन और शिवमणि की जुगलबंदी में आकंठ डूबे श्रोता

भास्कर समाचार सेवा

नागपुर, 23 जनवरी। उस्ताद जाकिर हुसैन ने गुरुवार को नागपुरवासियों को बता दिया कि वे विश्व प्रसिद्ध क्यों हैं? उस्ताद के तबले की थाप और शिवमणि की ड्रम की धुन के बीच लगभग दो घंटे तक चली जुगलबंदी से मंत्रमुग्ध करीब 5 हजार श्रोता डोलते रहे।

निर्झर कला संस्था द्वारा गुरुवार को विश्वप्रसिद्ध तबला वादक उस्ताद जाकिर हुसैन

शिवमणि की जुगलबंदी का आयोजन किया गया। संगीत के क्षेत्र की इन दोनों महान हस्तियों को देखने-सुनने के लिये नगर के संगीत प्रेमी उमड़ पड़े। कार्यक्रम की शुरुआत उस्ताद जाकिर हुसैन के तबला वादन के साथ हुई। कड़े अनुशासन और कठोर रियाज से निखरी उस्ताद की प्रतिभा का सम्मान श्रोतागणों की तालियों की गड़गड़ाहट ने किया। तबला वादन खत्म होते ही उस्ताद जाकिर हुसैन ने मजाकिया अंदाज में

आहात' उनके इतना कहते ही शिवमणि सबसे पिछले दरवाजे से, जनता के बीच आये। सभी श्रोताओं ने खड़े होकर शिवमणि का अभिवादन किया।

फिर शुरू हुई तबला, पखवाज मृदंग और ड्रम जुगलबंदी। जैसे ही तबले की थाप थोड़ी धीमी होती, तालियां बज उठतीं। इधर शिवमणि ताम्रपात्र से लेकर बांस के टुकड़े, डिब्बों में मूंगफल्ली रखकर या लोठों में पानी की मात्रा

को मंत्रमुग्ध किये हुए थे। दक्षिण अंबाझरी मार्ग पर स्थित डा. पंजाबराव देशमुख कृषि विश्वविद्यालय के मैदान पर लगभग दो घंटे मदहोशी का आलम छाया रहा। तबले की धुन और बीच-बीच में तालियों की गड़गड़ाहट आने-जाने वाले लोगों को रुकने के लिये मजबूर कर देती। अंत में उस्ताद जाकिर हुसैन ने कार्यक्रम का समापन इस अंदाज में किया 'खेल खतम, पैसा हजम, आता तुम्ही घरी जा, जेवण



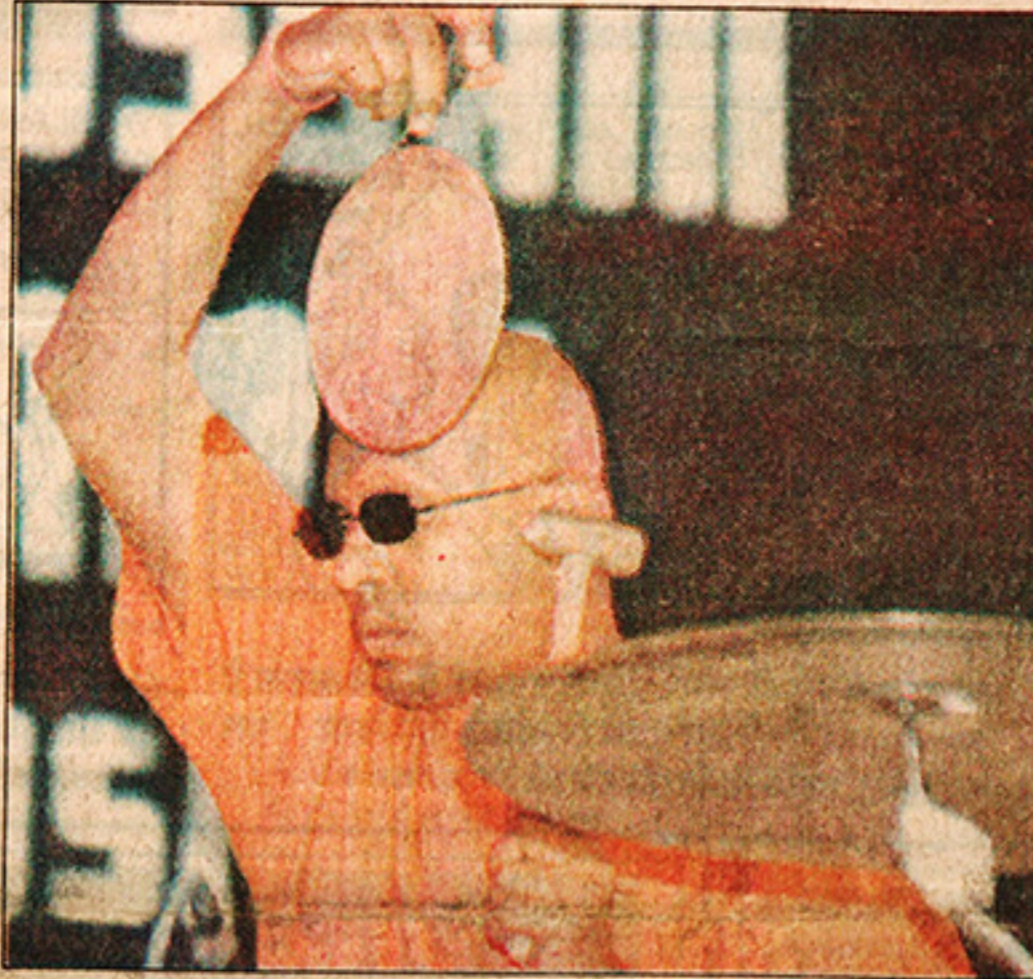
# सार्वभौम संगीत

## भारतीय व पाश्चात्य संगीत में फर्क करना अनुचित : जाकिर

नगर संवाददाता

नागपुर. विदेशी या हिंदुस्तानी संगीत में फर्क करना गलत है क्योंकि संगीत संगीत होता है. इसको सीमाओं में नहीं बांटा जा सकता. उक्त उद्गार प्रसिद्ध तबला वादक और वाह ताज फेम उस्ताद जाकिर हुसैन ने व्यक्त किए.

ड्रमिस्ट शिवमणि के साथ युगलबंदी कार्यक्रम पेश करने शहर में पधारे उस्ताद जाकिर हुसैन ने कहा कि पाश्चात्य और शास्त्रीय संगीत की जुगलबंदी से शास्त्रीय संगीत के अभ्यास पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा. उन्होंने कहा, 'मैंने शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ली है. उस शिक्षा को कायम रख कर ही पाश्चात्य संगीत की ओर कदम बढ़ाया है. इस प्रकार की जुगलबंदी को एक सुनहरे परिवर्तन के रूप में लिया जाना चाहिए. हर कला को सीखने की कोशिश करनी चाहिए. मगर उसके पहले अपने फन में माहिर होना आवश्यक है.' उन्होंने उदाहरण देकर कहा कि हर रोज एक ही प्रकार का खाना खाते हुए कभी थोड़ा अलग भी खाने की इच्छा होती है. फ्यूजन का इतिहास हजारों साल पुराना है. अपने प्रयास के साथ न्याय करते हुए उन्होंने राग खयाल



शिवमणि

की उत्पत्ति का उदाहरण दिया. पाश्चात्य चीजों को हाथ में लेने से भारतीयता नहीं बदलती है.

उन्होंने कहा, 'सभी कलाकार सरस्वती के उपासक होते हैं.' देवी-देवताओं के हाथ में विभिन्न वाद्य यंत्रों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि वे भी अच्छे कलाकार थे. भगवान शिव का डमरू और गणेश जी का पखावज... हिंदुस्तान में हमें इनका आशीर्वाद है. जब कलाकार मंच पर आता है तो मंच उसके लिए मंदिर बन जाता है. हर वाद्य में एक अलग आनंद होता है. संगीत के कलाकार जन्म से मौत तक विद्यार्थी होते हैं. वे हर पल नया सीखते हैं. गुरु के रूप में ब्रह्मा, विष्णु, महेश नजर आते हैं. गुरु जब सिखाता है तब भी सीख रहा होता है क्योंकि वह यह खोजता है कि शिष्य को किस तरह सिखाया जाए. संगीत में एक नंबर की रेटिंग नहीं की जा सकती. ड्रमर्स का बीट, लय, गति के साथ पूर्व जन्म का संबंध होता है. पहली बार नागपुर आए शिवमणि ने कहा कि वे अपने गुरु उस्ताद जाकिर हुसैन के साथ जुगलबंदी कर अच्छा महसूस कर रहे हैं. उन्होंने इसकी सफलता के लिए सुबह भगवान से प्रार्थना भी की थी.